हिन्दू धर्म-संस्कृति के ध्वजवाहक, सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत

राष्ट्र सन्त

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

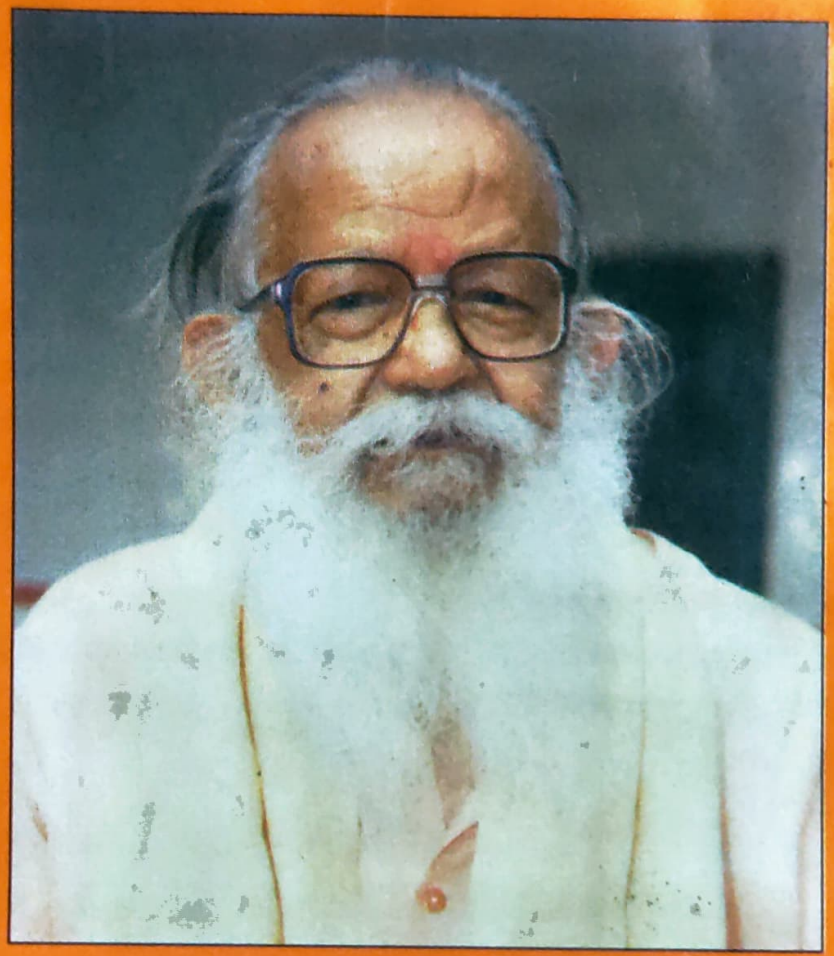

: प्रकाशक :

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

आमुख

सनातन हिन्दू धर्म-संस्कृति के पथ-प्रदर्शक राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का जीवन-वृत्त दर्शाने वाली यह पुस्तिका गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा प्रकाशित की गयी है। ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज हिन्दू धर्म-संस्कृति के ध्वजवाहक, हिन्दुत्वनिष्ठ राष्ट्रवादी राजनीति के पुरोधा, सामाजिक समरसता एवं एकता के अग्रदूत तथा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के प्राण थे। राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की ओर से यह विनम्र श्रद्धांजलि है। हमें विश्वास है कि इससे हिन्दुत्व एवं राष्ट्रप्रेम, शैक्षिक पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के प्रति आस्थावान लोगों को अपेक्षित प्रेरणा एवं प्रकाश प्राप्त होगा।

गोरखपुर
आश्विन कृष्ण चतुर्थी सं. २०७२
०१ अक्टूबर, २०१५

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
सिविल लाइन्स, गोलघर
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

राष्ट्र सन्त
महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है आत्मशुद्धि अर्थात् स्वयं शुद्धीकरण की। इसी विशेषता के परिणामस्वरूप वैदिक धर्म में जब कुछ विकार आया तो महात्मा बुद्ध पैदा हुए। जब बौद्ध धर्म में विकार उत्पन्न हुआ तो गुरु श्री गोरक्षनाथ तथा शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ। इस्लामी शासन में जब विकृतियों की सम्भावनाएँ बढ़ीं तो भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। इसी शृंखला को बनाये रखने वाले महापुरुषों की जो परम्परा स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, वीर विनायक दामोदर सावरकर, महामना मदन मोहन मालवीय, डॉ. केशवबलिराम हेडगेवार, सरदार वल्लभ भाई पटेल, माधव सदाशिव गोलवलकर गुरुजी, महन्त दिग्विजयनाथ तक अनवरत दिखाई देती है, गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उसी परम्परा के वर्तमान में जाज्वल्य नक्षत्र हैं। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर के रूप में अवेद्यनाथ जी महाराज ने जिस गुरु का उत्तराधिकार प्राप्त किया वे दिग्विजयनाथ जी महाराज हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता की वैचारिक विरासत की एक यशस्वी परम्परा सौंपकर ब्रह्मलीन हुए थे। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को अपने गुरुदेव से जो विरासत मिली उसका अन्दाजा इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि - महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गुलाम भारत में देश की आजादी के लिए कांग्रेस में रहते हुए भी हिन्दू हितों की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे। और उन्होंने सदैव कांग्रेस की उन नीतियों का विरोध किया, जिनसे हिन्दू जाति और धर्म के ऊपर किसी प्रकार के आघात की आशंका थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस जब मुस्लिम तुष्टीकरण के भस्मासुरी मार्ग पर चल पड़ी तो महन्त दिग्विजयनाथ जी ने कांग्रेस छोड़ दी और हिन्दू महासभा के संगठनकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति के सिपाही बन गये। 1939 ई. में उन्होंने अखिल भारतवर्षीय अवधूत वेष बारह पंथ योगी महासभा की स्थापना की तथा साधु सम्प्रदाय को एक नवीन दिशा प्रदान की एवं निष्क्रियता और एकान्तिकता के स्थान पर समाज-सापेक्ष कार्यों की ओर प्रेरित किया। भारत की संसद में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गरजते हुए कहा था- "जब तक धर्मप्राण भारत की पवित्र भूमि पर गोमाता के रक्त की एक बूँद भी गिरती रहेगी; तब तक देश अशान्ति की भट्ठी में जलता रहेगा। मैं तो हिन्दू धर्म का वकील हूँ, संन्यासी होते हुए राजनीति में केवल इसलिए उतरा हूँ, क्योंकि हिन्दू संस्कृति और सभ्यता पर आज चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं।" वे कहते थे राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है। किसी भूखण्ड में निवास करने वाले उस

---

*परमपूज्य महाराज जी के जीवन-वृत्त का मुख्य अंश उनके अभिनन्दन ग्रन्थ "राष्ट्रीयता के अनन्य साधक : महन्त अवेद्यनाथ" की रचना के समय उनसे बात-चीत एवं विविध प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित है।

समूह को ही राष्ट्र कहा जाता है, जो भू-खण्ड की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास आदि को मानता हुआ परस्पर एकता की अनुभूति रखता हो। अतः भारत हिन्दू राष्ट्र है, ऐसा हिन्दू राष्ट्र जहाँ किसी पर अत्याचार नहीं होगा। इस हिन्दू राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक निवासी के साथ न्याय होगा। प्रत्येक नागरिक को अपनी उपासना पद्धति अपनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी, परन्तु राष्ट्र के प्रत्येक निवासी को यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास, साहित्य और राष्ट्रीय महापुरुषों को सम्मान की दृष्टि से देखना होगा। वस्तुतः हिन्दुत्व ही वह शक्ति है जो विस्तृत भारतीय भूभाग वाले विभिन्न भाषा-भाषी करोड़ों जनता को एक सूत्र में बाँध सकती है। इस वैचारिक अधिष्ठान पर निर्मित विराट् व्यक्तित्व के धनी गुरु की भौतिक-आध्यात्मिक विरासत को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने न केवल सँभाला, अपितु गोरक्षपीठ को कई नये आयामों से भी जोड़ा। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के बहुआयामी विराट् व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में बाँध पाना असम्भव है तथापि विविध स्रोतों से ज्ञात किंचित तथ्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का बचपन का नाम कृपाल सिंह विष्ट था। आपके पिता श्री रायसिंह विष्ट हिमालय की गोद में बसे देवभूमि के पौड़ी गढ़वाल के काण्डी ग्राम के निवासी थे। 18 मई, 1919 को काण्डी ग्राम में जन्मे बालक को कौन जानता था कि एक दिन वह बालक देश-विदेश के हिन्दू धर्माचार्यों का नेतृत्व करेगा और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के उस यज्ञ का आचार्य बनेगा जिसकी प्रज्वलित अग्निशिखाओं से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, विशेषकर छुआछूत को भस्म करने की प्रेरणा एवं सन्देश प्राप्त होगा। किन्तु ईश्वर ने उन्हें भारत भूमि पर इसी महान कार्य हेतु भेजा था सो उसी अनुरूप परिस्थितियाँ करवट लेने लगीं।

महन्त जी से जब उनके बचपन की स्मृतियों पर चर्चा की गयी तो अपने चिर-परिचित दिव्य मुस्कान के साथ वे बोल पड़े कि संन्यासी का बचपन नहीं होता। दीक्षा के साथ ही पिछले जीवन से उसका नाता टूट जाता है और वह नया जीवन प्राप्त करता है। किन्तु अनेक बार के आग्रह पर एक क्षण मौन के पश्चात् महन्त जी अपने बचपन की स्मृतियों में लौटते हुए बताते हैं, "मुझे अपनी माँ का नाम याद नहीं है क्योंकि जब मैं बहुत छोटा था मेरे माता-पिता की अकाल मृत्यु हो गयी। मैं दादी की गोद में पल रहा था। उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा पूर्ण होते ही दादी का भी स्वर्गवास हो गया। परिणामतः मेरा मन इस संसार के प्रति उदासीन होता गया तथा वैराग्य का भाव मन में घर करता गया।"

महन्त जी कहते हैं कि इसी वैराग्य एवं विरक्ति की भावनानुभूति में गृहत्याग के साथ ऋषिकेश में संन्यासियों का साथ मिला। सत्संग से भारतीय धर्म-दर्शन में अध्ययन की रुचि विकसित हुई। उस समय वाराणसी भारतीय धर्म दर्शन के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। मैंने काशी में संस्कृत भाषा के अध्ययन के साथ भारतीय धर्म-दर्शन एवं योग-दर्शन का अध्ययन एवं अनुशीलन किया।

महन्त जी से जब यह जानना चाहा कि गृह त्याग के बाद वे कितनी बार अपने पैतृक गाँव गये, महन्त जी का जवाब विस्मयकारी था। उनके इस प्रश्न के उत्तर में ही बाल्यावस्था से ही महन्त जी की निवृत्तिमार्गी प्रवृत्ति का पता चल जाता है। संन्यासी होने के बाद वे एक बार अपने पितृगृह गये। वह भी अपने नैतिक एवं धार्मिक कर्तव्यों की पूर्ति हेतु। महन्त जी बताते हैं-''मेरे पिताजी तीन भाई थे। मैं अपने पिताजी का इकलौता पुत्र था। गृहत्याग एवं संन्यास के दौरान एक बार मेरे एक चाचा ऋषिकेश आये थे। दूसरे चाचा के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि मैं अपनी पूरी सम्पत्ति एक ही चाचा को न लिख दूँ। मुझे अपने हिस्से की पूरी पैतृक सम्पत्ति दोनों चाचा को बराबर देनी थी, अतः मैं इसी कार्य हेतु गया। न्यायालय में मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होकर मैंने अपनी पैतृक सम्पति दोनों चाचा के नाम बराबर-बराबर कर देने की अपनी संस्तुति दी तो मजिस्ट्रेट ने कहा कि आप अभी किशोर हैं, संन्यासी जीवन बड़ा कष्टमय होता है, कल पुनः गृहस्थ जीवन में लौटने की आपकी इच्छा हो सकती है, अतः अपनी सम्पत्ति देने से पूर्व एक बार और सोच लीजिए।" महन्त जी ने उस समय मजिस्ट्रेट को जो उत्तर दिया वह इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि वे पूर्णतः संन्यासी स्वभाव प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने कहा- "मैं अतिशीघ्र इस सम्पत्ति से छुटकारा पाना चाहता हूँ ताकि संन्यास जीवन से विमुख होने की सम्भावना ही शेष न रहे।" महन्त जी के दृढ़ निश्चय एवं तेजस्वी मुखमण्डल की चमत्कृत आभा से निरुत्तर मजिस्ट्रेट ने इनकी सम्पत्ति दोनों चाचा के नाम स्थानान्तरित कर दी। इस प्रकार संन्यासी जीवन से पूर्व के अपने जीवन से पूर्णतः नाता तोड़कर धार्मिक-आध्यात्मिक दुनिया की ओर बढ़े उनके कदम फिर वापस नहीं मुड़े।

किशोरावस्था में ही महन्त जी ने कैलाश मानसरोवर की यात्रा की। यह यात्रा उनके संन्यासी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुई। महन्त जी बताते हैं- "उत्तराखण्ड के बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि तीर्थस्थलों की यात्रा और अनेक सन्त-महात्माओं से मिलकर अपनी धार्मिक-आध्यात्मिक एवं योग विषयक जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु बात-चीत तथा सत्संग हम संन्यासियों की जीवनचर्या थी। बदरीनाथ यात्रा के दौरान ही कैलाश-मानसरोवर जाने की इच्छा जागृत हुई। उस समय कैलाश-मानसरोवर का मार्ग और भी दुर्गम था। पैदल यात्रा में लगभग बीस दिन लगते थे। तीन अन्य संन्यासियों के साथ स्थान-नीति को पार कर हम मानसरोवर की यात्रा पर चल पड़े। हम लोगों को यह सूचना थी कि मीठा सत्तू कैलाश मानसरोवर के आसपास के निवासी पसन्द करते हैं और छीन लेते हैं; अतः हम लोग नमकीन सत्तू अपने पास रखे हुए थे। कैलाश-मानसरोवर की यात्रा से एक अलग तरह की आध्यात्मिक अनुभूति हुई और मन में ईश्वर के साथ-साथ भारत माता की इस विस्तारित भूमि के साथ रागात्मक एकता की अद्‌भुत अनुभूति हुई। कैलाश मानसरोवर की यात्रा से वापस आते समय अल्मोड़ा से कुछ आगे बढ़े ही थे कि मुझे 'हैजा' हो गया। अत्यधिक उल्टी-दस्त के कारण मैं अचेत हो गया, मेरे साथ के संन्यासियों ने मान लिया कि अब मेरा जीवित बचना कठिन है, अतः वे मुझे उसी दशा में छोड़कर आगे चल दिये। दैवी कृपा से शाम को मुझे होश आया और शरीर में चेतना का संचार हुआ तो अपने आपको

अकेला पाकर इस नश्वर संसार का मर्म समझा। मेरा मन विरक्ति और वेदना से भर गया। मैं अकेले धीरे-धीरे चलते हुए हरिद्वार पहुँचा। अब मुझे लगता है कि इस घटना के पीछे ईश्वर की इच्छा छिपी थी। शायद ईश्वर मुझे 'सच' का साक्षात्कार कराना चाहते थे। कैलाश-मानसरोवर की इस यात्रा से मेरा मन बहुत विचलित हो चुका था। मैं संसार की नश्वरता के साथ आत्मा की अमरता के ज्ञान की खोज में बेचैन था कि मेरी भेंट योगी निवृत्तिनाथ जी से हो गयी। योगी निवृत्तिनाथ जी के योग, आध्यात्मिक दर्शन तथा नाथपंथ के विचारों से मैं प्रभावित होता चला गया। योगी निवृत्तिनाथ जी का सान्निध्य मुझे अच्छा लगने लगा, उनके साथ रहकर योग-साधना में मुझे शान्ति मिलने लगी। नाथपंथ के सामाजिक समन्वयवादी दृष्टिकोण एवं हठयोग-साधना की ओर मैं खिचता चला गया। यद्यपि कि उस समय तक मैं नाथपंथ में दीक्षित नहीं हुआ था, मात्र ब्रह्मचारी संत था। निवृत्तिनाथ जी के साथ अभी योग-साधना में कुछ माह बीते ही थे कि प्रकृति ने वर्षा ऋतु का स्वागत किया। चूँकि ऋषिकेश में बरसात के मौसम में मच्छर बहुत लगते थे और अक्सर लोगों को मलेरिया हो जाया करता था; अतः संत-महात्मा वर्षा ऋतु में ऋषिकेश से अन्यत्र चले जाते थे। योगी निवृत्तिनाथ जी के साथ मैं भी बंगाल के मेमन सिंह जाने हेतु वर्षावास के लिए चल पड़ा। योगी निवृत्तिनाथ जी द्वारा मैं तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के सामाजिक परिवर्तन, हिन्दुत्व पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीयता के प्रति समर्पण एवं जनान्दोलनों के नेतृत्व की चर्चा सुना करता था। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का बीज पहले से ही अंकुरित हो चुका था। मेमन सिंह जाते समय निवृत्तिनाथ जी गोरक्षनाथ मंदिर में एक रात विश्राम हेतु रुके। उन्होंने निवृत्तिनाथ जी का गोरक्षनाथ मंदिर में बड़े ही भावपूर्ण ढंग से आवभगत की। यह घटना 1940 की है। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज से मेरी यह पहली भेंट थी। दूसरे दिन जब हम बंगाल जाने हेतु तैयार हुए तो महन्त जी ने मुझसे अपना शिष्य एवं उत्तराधिकारी बनने की इच्छा व्यक्त की। किन्तु अभी मैं न तो नाथपंथ को ठीक से समझ पाया था और न ही किसी मठ का महन्त बनने के बारे में कुछ सोचा था। संन्यासी जीवन जीते हुए धर्म-दर्शन और योग-साधना के बारे में अभी मैं बहुत कुछ जानने की इच्छा का शमन नहीं कर सकता था, सो बड़ी विनम्रतापूर्वक अपनी अनिच्छा बताकर मैं निवृत्तिनाथ जी के साथ बंगाल के मेमन सिंह के लिए निकल पड़ा। मेमन सिंह में मेरी भेंट उद्भट विद्वान् एवं दार्शनिक अक्षय कुमार बनर्जी से हुई। उनके साथ भारतीय-दर्शन और नाथपंथ के बारे में विस्तार से बातचीत होती रही और मैं वहाँ इनके दर्शन साहित्य का अध्ययन करता रहा। गोरक्षनाथ जी के बारे में एवं गोरक्षदर्शन का अध्ययन करने का भी अवसर मुझे सर्वप्रथम यहीं प्राप्त हुआ।

वर्षाऋतु के पश्चात् हम वापस ऋषिकेश आ गये। ऋषिकेश में रहकर मैं योगी शान्तिनाथ द्वारा लिखित प्राच्यदर्शन समीक्षा का अध्ययन करने लगा और शान्तिनाथ जी के बारे में मेरी उत्सुकता बढ़ती गयी। योगी निवृत्तिनाथ जी ने बताया कि शान्तिनाथ जी भी योगी गम्भीरनाथ जी के ही शिष्य हैं और वे कराची से करीब 10 मील दूर एक सेठ के बागीचे में आश्रम बनाकर रहते हैं। योगी निवृत्तिनाथ

जी से ही ज्ञात हुआ कि योगी शान्तिनाथ जी दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान और नाथपंथ के ज्ञाता होने के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानी भी हैं। अंग्रेजों द्वारा उन्हें ढाका षड्यन्त्र में बन्दी बनाया गया था। शान्तिनाथ जी से मिलने की मेरी उत्सुकता को देखते हुए योगी निवृत्तिनाथ जी ने योगी शान्तिनाथ जी के यहाँ जाने हेतु योजना बनायी और मुझे लेकर कराची के लिए निकल पड़े।

हम योगी शान्तिनाथ के यहाँ पहुँचे और उनके आश्रम में रहने लगे। उनके साथ भारतीय दर्शन के विविध विषयों पर गंभीर चर्चा में मेरा मन रमता गया। उसी दौरान गम्भीरनाथ जी महाराज एवं दिग्विजयनाथ जी महाराज के बारे में वे कुछ न कुछ बताया करते थे। नाथपंथ के सामाजिक क्रान्ति के विविध पक्षों ने मुझे बहुत हद तक प्रभावित किया। योग के प्रति मैं शुरू से आकर्षित था। गुरु श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रतिपादित 'योग दर्शन' और 'गोरखवाणी' के अध्ययन का अवसर भी मुझे शान्तिनाथ के सान्निध्य में मिला। दो योग्य संन्यासियों के सत्संग में मैं रम चुका ही था। तभी दैवी कृपा से एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। हम जिस सेठ के बागीचे में आश्रम बनाकर रहते थे, हमारे भोजन आदि की व्यवस्था उसी सेठ के द्वारा की जाती थी। हमारे भण्डारे में तीन दिन से घी समाप्त हो गया था। सूचना पाने के बाद भी सेठ ने भण्डारे में घी नहीं भिजवाया तो हमें यह महसूस हुआ कि हम सेठ पर बोझ बन रहे हैं और सेठ हमारी भोजनादि की व्यवस्था प्रसन्न मन से नहीं कर रहा है। शान्तिनाथ जी इस घटना से बहुत दुःखी हुए और उस स्थान को छोड़ने का निर्णय ले लिया। इसी घटना से दुःखी शान्तिनाथ जी ने कहा कि गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने अपने योग्य उत्तराधिकारी के लिए मुझसे कहा था। मैं पत्र लिख देता हूँ तुम वहीं चले जाओ। उसी समय निवृत्तिनाथ जी ने 1940 में गोरखपुर प्रवास के दौरान महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा मुझे उत्तराधिकारी बनाने के प्रस्ताव के विषय में भी शान्तिनाथ जी से बताया। योगी शान्तिनाथ जी ने जोर देकर मुझे गोरखपुर जाने का निर्देश दिया। तब मैंने उनसे विनयवत् आग्रह किया कि महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा दो वर्ष पूर्व यह प्रस्ताव किया गया था, अब तक वे हमारी प्रतीक्षा में बैठे नहीं होंगे। किसी न किसी को वे अपना उत्तराधिकारी बना चुके होंगे। मेरी बात पर योगी शान्तिनाथ जी गम्भीर हुए और उन्होंने महन्त दिग्विजयनाथ जी के पास मुझे उत्तराधिकारी बनाने का पत्र डाक द्वारा भेज दिया। पत्र पाने के बाद, जैसे कि महन्त दिग्विजयनाथ जी मेरी प्रतीक्षा में ही बैठे हों, उन्होंने मुझे गोरखपुर आने की स्वीकृति के साथ-साथ यात्रा व्यय भी भेज दिया। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि भविष्य में घटने वाले घटनाक्रमों पर उस अन्तर्यामी योगी शान्तिनाथ की दृष्टि पड़ चुकी थी। मैं इसे दैवी आदेश मानकर निवृत्तिनाथ जी के साथ गोरखपुर आया। गोरक्षनाथ मंदिर में जब मैं महन्त दिग्विजयनाथ जी के सम्मुख प्रस्तुत हुआ तो उनके मुख-मण्डल पर दिव्य आभामयी मुस्कान ने मुझे सदा-सदा के लिए उनका अपना बना दिया। मैंने मन ही मन उनको अपने गुरु के रूप में वरण किया और उनके साथ रहने लगा। उनकी मनसा-वाचा-कर्मणा में अद्भुत एकरूपता तथा हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति पूर्ण समर्पण से युक्त विराट् व्यक्तित्व के धनी महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के समक्ष मैं समर्पित होता चला गया।''

नाथपंथ में दीक्षा

महन्त अवेद्यनाथ जी की कृपाल सिंह विष्ट से संन्यासी बनकर 'अवेद्य' बनने की वास्तविक यात्रा नाथपंथ में दीक्षा के साथ प्रारम्भ हुई। 8 फरवरी सन् 1942 ई. को गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा इन्हें विधिवत दीक्षा देकर अपना शिष्य एवं उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। वस्तुत: यह वर्ष भारत के स्वतंत्रता संग्राम का महत्त्वपूर्ण वर्ष था। महन्त दिविग्जयनाथ जी हिन्दू महासभा के माध्यम से आजादी की लड़ाई के एक संन्यासी योद्धा थे। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन की घोषणा से देशभर के आजादी के योद्धा हरकत में आ चुके थे। महन्त दिग्विजयनाथ जी भी नेपाल सहित इस सम्पूर्ण क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन-जागरण अभियान में व्यस्त रहते थे तथा जर्मनी एवं जापान की मदद से सक्रिय आजाद हिन्द फौज की सहायता कर रहे थे। परिणामत: अवेद्यनाथ जी को गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था की पूर्ण जिम्मेवारी उठानी पड़ी। महन्त दिग्विजयनाथ जी के निर्देशन में वे गोरक्षनाथ मन्दिर से जुड़े विभिन्न धर्मस्थानों एवं संस्थानों की देख-रेख में निष्णात होते गये। महन्त दिग्विजयनाथ जी को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ। परिणामत: 1944 में गोरखपुर में हिन्दू महासभा का ऐतिहासिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमें श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी सम्मिलित हुए।

इसी कालखण्ड में भारत विभाजन की माँग जोर पकड़ती जा रही थी। मुस्लिम लीग के नेतृत्व में देशभर में साम्प्रदायिक दंगों की आग सुलग रही थी। जगह-जगह हिन्दुओं पर संगठित साम्प्रदायिक आक्रमण आरम्भ हो चुके थे। ऐसे में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में हिन्दू महासभा उत्तर भारत में भारत विभाजन के तीव्र विरोध के साथ-साथ हिन्दू समाज को संगठित करने के भगीरथ प्रयास में लगी हुई थी। अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था संभाल लेने से महन्त दिग्विजयनाथ जी को सामाजिक-राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए।

खण्डित भारत की स्वतंत्रता, इस्लामी आतंक, साम्प्रदायिक दंगे और भीषणतम नरसंहारों के साये में प्राप्त हुई। अभी इसकी आग बुझी नहीं कि 1948 में महात्मा गाँधी की हत्या हो गयी। महन्त दिग्विजयनाथ जी की सामाजिक-राजनीतिक सक्रियता से घबड़ाई सरकार को बहाना मिल गया और षड्यन्त्रपूर्वक महन्त जी को महात्मा गाँधी की हत्या के तथाकथित षड्यन्त्र में गिरफ्तार कर उन्नीस महीने जेल में बन्द कर दिया गया तथा गोरक्षनाथ मंदिर की समस्त चल-अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। उस दौरान अवेद्यनाथ जी महाराज ने नेपाल में रहकर गोपनीय ढंग से गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था एवं महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को निर्दोष सिद्ध करने हेतु सफल प्रयास किया। गाँधी हत्या के समय की एक टना का जिक्र करते हुए महन्त अवेद्यनाथ कहते हैं, "नेपाल में रहकर मैं गोरक्षनाथ मन्दिर एवं महन्त जी के मुकदमे की पैरवी कर रहा था कि लखनऊ से प्रकाशित समाचार पत्र 'नवजीवन' ने यह दुष्प्रचारित कर दिया कि महात्मा गाँधी की हत्या महन्त जी की रिवाल्वर से की गयी। यह तथ्य भी मुकदमे में जुड़

गया। तब मैंने गोरखपुर के जिलाधिकारी से सम्पर्क कर यह स्पष्ट किया कि महन्त जी के रिवाल्वर की जाँच कर सकते हैं। जिलाधिकारी ने आकर स्वयं जाँच की।" और फिर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हँसते हुए बताते हैं कि जेल से छूटने के बाद महन्त जी ने 'नवजीवन' अखबार के मालिकानों को क्षमा कर दिया।

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में हिन्दू समाज की एकता का प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो चुका था। जन्मना जाति व्यवस्था के श्रेष्ठतावाद एवं अस्पृश्यता जैसी विकृतियों से हिन्दू समाज के खण्डित तथा कमजोर होने की संभावनाएँ प्रबल होती जा रही थीं। भारतीय शासन विकृत धर्म निरपेक्षता तथा वोट बैंक की राजनीति के अन्तर्गत अंग्रेजों की 'बाँटो और राजकरो' की नीति का ही अनुगामी बना हुआ था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने सामाजिक-शैक्षिक पुनर्जागरण के साथ-साथ राजनीतिक मंच पर हिन्दू समाज की सिंह गर्जना का अभियान आरम्भ किया और उनके उत्तराधिकारी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उनके सक्रिय सहयोगी एवं अनुगामी बने।

राजनीति में महन्त अवेद्यनाथ

धर्म की रक्षा के लिए राजनीति महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को अपने गुरुदेव से विरासत में प्राप्त हुई। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के साथ-साथ ही शिष्य रूप में ही महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज राजनीतिक मंच पर भी सक्रिय हो चुके थे। 1962 में उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में मानीराम विधानसभा से विजयी होकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज पहली बार विधानसभा के सदस्य बने और लगातार 1977 ई. तक के विधानसभा चुनाव तक मानीराम विधानसभा से चुनाव में विजयी होते रहे। 1980 ई. में मीनाक्षीपुरम् में हुए 'धर्म परिवर्तन' की घटना से विचलित महन्त जी राजनीति से संन्यास लेकर हिन्दू समाज की सामाजिक विषमता के विरुद्ध जन-जागरण के अभियान पर चल पड़े।

लोकसभा चुनाव में पहली बार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर 1969 ई. के उपचुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को गोरखपुर की जनता ने ससम्मान संसद में भेज दिया। पुनः 1989 ई. में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन जब अपने उत्कर्ष पर था, तथाकथित सेकुलर राजनीतिक दल यह चुनौती देने लगे कि इस आन्दोलन को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है। इन परिस्थितियों में अयोध्या में हुए धर्म संसद में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से लोकसभा चुनाव जीतकर सेकुलर दलों को जवाब देने का प्रस्ताव पास हुआ और महन्त जी हिन्दू महासभा से 1989 ई. के लोकसभा चुनाव में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण के मुद्दे पर सम्पूर्ण हिन्दू सन्त-महात्माओं के समर्थन से चुनावी जंग में कूदे और विजयी हुए। इस चुनाव में भारतीय जनतापार्टी और श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल के गठबन्धन का प्रत्याशी भी चुनाव मैदान में था। तत्पश्चात् लोकसभा के 1991 के मध्यावधि चुनाव तथा 1996 के लोकसभा चुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विजयी होते रहे।

लोकसभा में सम्मानित सदस्य होते हुए महन्त जी 1971, 1990 एवं 1991 में भारत सरकार के गृहमंत्रालय की परामर्शदात्री समिति के सदस्य रहे। राजनीति में भी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अपराजेयता सभी ने स्वीकारी। 1996 के चुनाव के समय दैनिक समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा' ने अपनी टिप्पणी में लिखा- मौजूदा सांसद अवेद्यनाथ सुप्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर हैं। वह जितने बड़े सन्त हैं उतने ही बड़े राजनेता भी हैं। इस मण्डल में वह इकलौते शख्स हैं जिन्होंने पाँच बार विधानसभा और तीन बार लोकसभा का चुनाव जीता है। वह 1962 में पहली बार विधायक बने। हिन्दू महासभा से 1967, 1969, 1974 और 1977 में विधायक चुने गये। स्पष्ट है कि किसी का राज, किसी का प्रभाव, किसी की लहर उनकी जीत को न रोक सकी। यहाँ तक कि जनता लहर में भी वह अपराजेय रहे। 1998 ई. के लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपने शिष्य एवं उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी महाराज को चुनाव लड़ने का निर्देश दिया। 1998 से अद्यतन गोरखपुर की संसदीय सीट पर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की कृपा एवं आशीर्वाद से पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज अपराजेय धर्मयोद्धा की प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सदैव राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं भारतीय संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा तथा हिन्दू समाज की रक्षा में अपनी राजनीतिक भूमिका निर्धारित की।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत

गोरक्षपीठ हिन्दू समाज की विकृतियों के खिलाफ जन-जागरूकता एवं हिन्दू समाज को सामाजिक-राजनीतिक-आध्यात्मिक नेतृत्व देने के लिए ही सदा से प्रतिष्ठित रहा है। नाथपंथ का अभ्युदय ही हिन्दू तंत्र-साधना में पंचमकार के शमन के साथ दिखाई देता है। तथापि बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में गोरक्षपीठ ने सामाजिक परिवर्तन की जो मशाल प्रज्वलित की वह महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा देश भर में चलाये गये छुआछूत विरोधी अभियानों से पूर्णत: देदीप्यमान हो गयी। हम लोग पूज्य महन्त जी को 1987 ई. से लगातार सुनते आ रहे हैं। कोई मंच हो, कोई विषय हो; किन्तु महाराज जी के उद्‌बोधन में हिन्दू समाज की एकता और छुआछूत समाप्त करने की अपील किसी न किसी रूप में आ ही जाती है। यद्यपि कि महन्त जी द्वारा छुआछूत विरोधी एवं हिन्दू समाज में सामाजिक समरसता का प्रयास तो गोरक्षपीठ से प्राप्त वैचारिक उत्तराधिकार के रूप में प्रारम्भ से ही चलता रहा, किन्तु 1980 ई. में मीनाक्षीपुरम् और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कराये गये धर्म परिवर्तन ने महाराज जी को अन्दर से हिला दिया। वे व्यथित हुए और मात्र दु:खी होकर पीड़ा सहकर चुप बैठने के बजाय राजनीति से संन्यास लेकर हिन्दू समाज की एकता और सामाजिक समरसता के यज्ञाभियान पर निकल पड़े।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को जिस राष्ट्र विरोधी एवं गैर संवैधानिक सामूहिक धर्मान्तरण ने विचलित कर दिया वह 19 फरवरी, 1980 को घटित मीनाक्षीपुरम् की घटना है। मीनाक्षीपुरम् का नाम

बदलकर 'रहमत नगर' कर दिया गया। बड़े धूम-धाम से आयोजित इस धर्मान्तरण समारोह में आसपास के तेनाक्षी, कडयनल्लुर, वदकरी व वनगरम् आदि गाँवों के मुसलमान अपने-अपने परिवारों के साथ सम्मिलित हुए। कडयनल्लुर के विधायक श्री सहुल हमीद ने भी सक्रिय भागीदारी निभायी। इस समारोह में एक सौ अस्सी हिन्दू परिवारों (हरिजन) को धर्मान्तरित कर उस दिन एक बजे, साढ़े चार बजे, साढ़े छः बजे जुहर, अझर एवं मकुआरिब हुआ और साथ ही सारा समुदाय कलमा पढ़ता रहा।

मीनाक्षीपुरम् के धर्मान्तण समारोह से प्रारम्भ यह धर्मान्तरण अभियान आसपास के क्षेत्रों में लगभग एक वर्ष तक चलता रहा, किन्तु मीनाक्षीपुरम् धर्मान्तरण का पूरे देश में विरोध शुरू हो गया। पूज्य महंत **अवेद्यनाथ** जी महाराज ने धर्मान्तरण के विरोध में अत्यन्त कठोर शब्दों में अपनी आपत्ति दर्ज कराते हुए दुहराया कि यह धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण के अभियान की शुरुआत है। किन्तु महन्त जी मात्र अपनी आपत्ति दर्ज कराकर चुप नहीं हुए। वे कहते हैं कि -"मुझे यह लगा कि उस मूल कारण पर चोट होनी चाहिए कि जिससे हमारे ही बन्धु-बान्धव हजारों वर्षों की अपनी परम्परा, धर्म और उपासना पद्धति बदलने के लिए तैयार हो जा रहे हैं और मैंने महसूस किया कि जब तक हिन्दू समाज में अस्पृश्यता का कोढ़ बना रहेगा, अपने ही समाज में उपेक्षित और तिरस्कृत बन्धुओं को कोई भी गुमराह कर धर्मान्तरण हेतु प्रोत्साहित और प्रेरित कर सकता है। अतः मैं गाँव-गाँव जाकर छुआछूत के विरुद्ध अभियान छेड़ने का निश्चय लेकर निकल पड़ा। इसी समय मेरे मन में यह बात आयी कि मेरे इस सामाजिक समरसता अभियान पर लोग यह न सोचें कि यह साधु वोट के लिए ऐसा कर रहा है, मैंने राजनीति को तिलांजलि दे दी और चुनाव न लड़ने का निर्णय घोषित कर दिया।"

1980 से गाँवों में लगातार महन्त जी के जनसम्पर्क एवं तथाकथित अछूतों के साथ बैठकर सहभोज ने क्रान्ति पैदा कर दी और सामाजिक परिवर्तन की आँधी में जिस तेजी से समाज बदला वह सभी ने देखा। इस दृष्टि से काशी में डोमराजा के घर पर महन्त जी की अगुवाई में धर्माचार्यों द्वारा किये गये भोजन का देश भर में स्वागत हुआ। दैनिक समाचार पत्र 'आज' ने लिखा-सदियों से बिखरी पड़ी हिन्दू एकता की सभी कड़ियों को परस्पर मजबूती से जोड़कर सशक्त हिन्दू समाज का पुनर्निर्माण करने के उद्देश्य से छुआछूत मिटाने के प्रयासों को ठोस आधार प्रदान करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर तथा सांसद महन्त अवेद्यनाथ ने अनेक प्रमुख सन्त महात्माओं के साथ गुरुवार (18 मार्च, 1994) को प्रातःकाल काशी के डोमराजा सुजीत चौधरी के घर उनकी माँ के हाथों भोजन कर अस्पृश्यता की धारणा पर जोरदार चोट की। मान मन्दिर स्थित डोमराजा के आवास पर उनके वंशज श्री संजीत चौधरी की देखरेख में सूर्योदय के पूर्व से संतों के स्वागत तथा उन्हें भोजन कराने की तैयारियाँ शुरू हो गयी थीं। आसपास के लोगों ने जब यह सुना कि कुछ ही देर बाद अनेक संत-महात्मा डोमराजा के यहाँ भोजन करने आ रहे हैं तो किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन नौ बजे के लगभग जब दशाश्वमेध घाट से डोमराजा के आवास की ओर जाने वाली गली में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में ६ र्माचार्यों के काफिले ने प्रवेश किया तो सभी नागरिक अभिभूत हो उठे। सदियों तक चाण्डाल कहकर

पुकारे गये, समाज की मुख्य धारा से अलग अस्पृश्य माने गये इस परिवार के यहाँ देश के वरिष्ठ सन्तों के भोजन का यह दृश्य देखने जनता उमड़ पड़ी। अस्पृश्यता की जड़ अवधारणा पर निर्णायक प्रहार का ऐसा मार्मिक दृश्य देखकर लोगों के नेत्र आनन्दातिरेक से छलछला उठे। संजीत चौधरी की माँ श्रीमती सारंग देवी भोजन कराते-कराते इस कदर भाव-विह्वल हो गयी थीं कि उनकी आँखों से झर-झर अश्रुपात होने लगा। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप क्यों रो रही हैं?उनका उत्तर था- "आज संजीत क बाऊ होतन तऽ केतना खुश होतन।" भोजन के बाद परम्परानुसार संजीत चौधरी की माँ ने संतों को दक्षिणा देने का प्रयास किया तो महन्त अवेद्यनाथ ने उन्हें रोका और फिर सन्तों से उन्होंने कहा कि कोई दक्षिणा नहीं लेगा अन्यथा कल ही अखबार वाले छाप देंगे ये सन्त-महात्मा दक्षिणा के लिए ही भोजन करने आये थे। भोजनोपरान्त महन्त अवेद्यनाथ ने डोमराजा के घर में बने रामजानकी मन्दिर के समक्ष सिर नवाया। अन्य सन्तों ने भी उनका अनुकरण किया। बाद में जब एक पत्रकार ने महन्त अवेद्यनाथ से पूछा कि डोमराजा के घर भोजन कर आपको कैसा लगा?उनका उत्तर था- "गंगा के तट पर डोमराजा के घर भोजन कर मैं धन्य हुआ हूँ। क्योंकि सदियों से भारतीय समाज में कोढ़ की तरह जड़ हो चुके छुआछूत को मेरे साथ देश के धर्माचार्यों ने एक बार फिर शास्त्र विरुद्ध घोषित कर हिन्दू समाज की एकता का मार्ग प्रशस्त किया है।" महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा चलाये गये सामाजिक समरसता के अभियान का यह चरमोत्कर्ष था।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इससे पूर्व श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले भव्यतम मन्दिर का शिलान्यास हिन्दू समाज में घोषित किसी अछूत से कराने का प्रस्ताव कर दुनिया को यह संदेश दे दिया कि हिन्दू धर्माचार्य और हिन्दू समाज अपनी सामाजिक विकृतियों को समाप्त करने हेतु संकल्पबद्ध हो रहा है। परिणामत: दुनिया ने देखा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर बनने वाले पवित्र एवं विशाल मन्दिर की पहली ईंट एक दलित ने रखी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रयास से श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास लाखों श्रीराम भक्त हिन्दू जनता तथा परम्परा और रूढ़ियों को ताड़ने हेतु कृत संकल्पित भारत के विभिन्न हिस्सों से आये विविध पंथों के संत-महात्माओं की उपस्थिति में एक तथाकथित अस्पृश्य द्वारा किया जाना भारत के सामाजिक- धार्मिक इतिहास में सामाजिक परिवर्तन की क्रान्ति का सूत्रपात था। श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का प्रश्न हिन्दू समाज और भारतीयता की प्रतिष्ठा का प्रश्न था ही, इस मुद्दे ने भारत की राजनीतिक सत्ता के उथल-पुथल का जो दृश्य प्रस्तुत किया उस पर सारी दुनिया की निगाहें टिकी थीं। ऐसे महत्त्वपूर्ण आयोजन पर हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता जैसे कोढ़ के खिलाफ यह प्रतीकात्मक पहल दुनिया को संदेश देने के साथ-साथ हिन्दू समाज को यह संदेश देने का माध्यम बना कि छुआछूत न तो शास्त्र-सम्मत है, न ही धर्म सम्मत। यह एक विकृति है, रूढ़ि है जिसे धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं हिन्दू समाज ने पूर्णत: खारिज कर दिया है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा सामाजिक समरसता हेतु किये गये भगीरथ प्रयासों का संकलन और उनका उल्लेख तो सम्भव नहीं है किन्तु पटना के महावीर मन्दिर में दलित (हरिजन)

पुजारी की प्रतिष्ठा के प्रयास का इतिहास में हमेशा उल्लेख किया जाता रहेगा। बिहार जब जातिवादी-साम्प्रदायिक राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर था; श्री लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में सत्ता पर काबिज रहने के लिए जातिवाद के विषवेलि को पूर्णतः खाद-पानी प्राप्त हो रहा था; बिहार एक प्रकार से जल रहा था, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इस जातिवादी राजनीति के सीने पर चढ़कर बिहार की राजधानी पटना में स्थित महावीर मन्दिर में सूर्यवंशी लाल उर्फ फलाहारी बाबा (हरिजन) को पुजारी नियुक्त कर एक बार फिर भारत की सामाजिक विखण्डनकारी राजनीति को आईना दिखा दिया। समारोह के साथ पुजारी नियुक्त किया गया। इस समारोह में महन्त जी के साथ स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज भी उपस्थित हुए। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के इस युग-परिवर्तनकारी प्रयास को दुनिया भर में सराहा गया।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सामाजिक समरसता के प्रश्न पर सदैव स्पष्टवादी रहे। उन्होंने इस प्रश्न पर धर्माचार्यों, संत-महात्माओं, राजनीतिज्ञों, किसी को भी क्षमा नहीं किया, यदि वे हिन्दू समाज की एकता के विरुद्ध अथवा अस्पृश्यता के पक्ष में खड़े हुए।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एकबार अपने प्रिय एवं पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती के खिलाफ भी तब तनकर खड़े हो गये जब उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित समारोह में एक विदुषी महिला को वेदपाठ करने पर रोक दिया। महन्त जी ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह कृत्य कहीं से भी न तो न्यायसंगत है और न ही धर्मानुसार उचित है। यह कृत्य महिला समाज का अपमान करता ही है इससे हिन्दुत्व भी लांछित होता है। कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसे कृत्य का समर्थन नहीं कर सकता। आज जबकि जातिवाद, ऊँच-नीच, छूत-अछूत आदि विकृतियों को शह देकर हिन्दू समाज को बाँटने एवं कमजोर करने का षड्यन्त्र चल रहा है, जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा महिलाओं के वेदपाठ पर आपत्ति न तो धर्मानुकूल है और न ही युगानुकूल।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध पूर्णतः सामाजिक समरसता, हिन्दू समाज के पुनर्जागरण और श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान को समर्पित कर दिया। उन्होंने 1980 के बाद से ही हिन्दू समाज से अस्पृश्यता उन्मूलन एवं श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण को अपने जीवन का मिशन बना लिया और अब तक सोते-जागते, उठते-बैठते महाराज जी के बातचीत के केन्द्र बिन्दु यही दो मुद्दे होते हैं।

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के नायक

की दिशा बदल दी, नेतृत्व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने ही किया। पांथिक विविधता और मतभिन्नता से युक्त हिन्दू समाज के धर्माचार्यों में जिस एक नाम पर सहमति थी

की दिशा बदल दी, नेतृत्व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने ही किया। पांथिक विविधता और मतभिन्नता से युक्त हिन्दू समाज के धर्माचार्यों में जिस एक नाम पर सहमति थी वह गोरक्षपीठाधीश्वर का ही नाम था। शैव, वैष्णव, शाक्त, बौद्ध, जैन, सिख, विविध अखाड़ों सहित बड़ी संख्या के मतावलम्बी धर्माचार्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति समान श्रद्धा एवं निष्ठा रखते हैं। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता एवं ऊँच-नीच जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ देश भर में जन-जागरण अभियान पर निकलकर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सर्वप्रथम धर्माचार्यों के बीच अपने-अपने मत-श्रेष्ठतावाद का खण्डन किया और भारत के लगभग सभी शैव-वैष्णव इत्यादि धर्माचार्यों को एक मंच पर खड़ा किया था। परिणामत: जब श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ-समिति का गठन हुआ तो 21 जुलाई, 1984 को अयोध्या के वाल्मीकि भवन में सर्वसम्मति से महन्त जी को अध्यक्ष चुना गया। तब से अब तक श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अध्यक्ष हैं और उनके नेतृत्व में भारत में ऐसे जनान्दोलन का उदय हुआ जिसने भारत में सामाजिक-राजनीतिक क्रान्ति का सूत्रपात किया। विकृत धर्मनिरपेक्षता एवं मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति का काला चेहरा उजागर हुआ। हिन्दुत्व पर नये सिरे से दुनियाभर में बहस शुरू हुई। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की आन्तरिक ताकत का एहसास हुआ। भारत सहित दुनिया के इतिहास में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन और उसके प्रभाव एवं परिणाम का अध्याय महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का उल्लेख हुए बिना अधूरा रहेगा।

श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति और उस स्थान पर भव्य मन्दिर निर्माण के लिए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में अत्यन्त योजनापूर्वक जनान्दोलन की रूपरेखा बनी और 1984 से प्रारम्भ किये गये इस चरण का आन्दोलन एक हद तक परिणाम पर पहुँचा और उस स्थान पर स्थित विदेशी आक्रान्ता द्वारा निर्मित हिन्दू समाज को चिढ़ाने और अपमानित करने वाला 'ढाँचा' ध्वस्त कर दिया गया तथा श्रीराम जन्मभूमि पर कारसेवकों ने भगवान् श्रीराम का 'मन्दिर' अपने हाथों से बना दिया। अब उस मन्दिर को 'भव्यतम' बनाने का कार्य ही मात्र शेष है। लगभग पाँच शताब्दियों से चल रहे संघर्ष को अन्ततः पूज्य महन्त जी के नेतृत्व में एक बड़ी सफलता प्राप्त हुई। महन्त जी ने 1984 के बाद से श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति द्वारा चलाये गये जन-संघर्ष का सफलतम नेतृत्व किया।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में लगभग दो दशक तक अनवरत चले श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन ने न केवल श्रीराम जन्मभूमि पर हिन्दू समाज को अपमानित करते हुए चिढ़ाने वाला ढाँचा ध्वस्त हुआ अपितु आजाद भारत में हिन्दू विरोधी राजनीति का ढाँचा भी टूटा। भारत सहित दुनिया भर में 'हिन्दुत्व' बहस का मुद्दा बना और हिन्दुत्व पुनर्जागरण के एक नये युग का शुभारम्भ हुआ। हिन्दू समाज के विविध पंथों के धर्माचार्य एक साथ एक मंच पर आये। यह युग भारत में हिन्दू एकता के लिए तो जाना ही जायेगा साथ ही महात्मा गाँधी की इस उक्ति को झुठलाने के लिए भी प्रामाणिक होगा कि 'हिन्दू कायर होता है'। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन की सफलता के तमाम महत्त्वपूर्ण कारणों में एक

महत्त्वपूर्ण कारण गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का नेतृत्व सभी पंथों के धर्माचार्यों द्वारा सर्वस्वीकार्य होना भी था। भारत के इतिहास में जब भी श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन पर चर्चा होगी, वह चर्चा महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के बगैर अधूरी मानी जायेगी।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के मसीहा

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन के समय ही गोरक्षपीठ ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का दीप जलाया। 1932 ईस्वी में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना इसी प्रज्वलित दीप के प्रकाश की एक किरण थी। स्वाधीनता आन्दोलन के समय भारतीय मनीषियों को यह महसूस हो चुका था कि आजादी प्राप्त होने के बाद आजाद भारत का नेतृत्व करने वाली पीढ़ी रूप-रंग के साथ-साथ आचार-व्यवहार से भी भारतीय होनी चाहिए। एक तरफ स्वामी विवेकानन्द अंग्रेजी शासन की शिक्षा पर कह रहे थे- ये शिक्षा हमें हमारे महान पुरुषों के इतिहास से नहीं अपितु अंग्रेजों महान पुरुषों के इतिहास से अवगत कराती है। ये शिक्षा हमें दुर्बल बनाती है, सबल नहीं। शिक्षा के माने कण्ठस्थ करना नहीं है अपितु शिक्षा आवश्यकता के अनुरूप ही दी जानी चाहिए। शिक्षा वही है जो राष्ट्रीय पद्धति से दी जाये। स्वामी जी आगे कहते हैं- जब तक लाखों लोग भूखे और अज्ञानी हैं, तब तक मैं इस प्रत्येक व्यक्ति को कृतघ्न समझता हूँ, जो उनके बल पर शिक्षित तो बना परन्तु आज उसकी ओर ध्यान तक नहीं देता। दूसरी तरफ लॉर्ड मैकाले की आवाज गूँज रही थी- हमारे अंग्रेजी विद्यालय प्रशंसनीय ढंग से असाधारण उन्नति कर रहे हैं।.... मेरी बनाई शिक्षा पद्धति से यहाँ (भारत में) यदि शिक्षा प्रणाली चलती रही तो आगामी तीस वर्षों में एक भी आस्थावान हिन्दू नहीं बचेगा। या तो वे ईसाई बन जायेंगे या नाम मात्र के हिन्दू बने रहेंगे। धर्म या वेदशास्त्रों पर उनका विश्वास नहीं होगा।

मैकाले की शिक्षा पद्धति की अनुगूँज आनन्द कुमार स्वामी की पीड़ा में भी सुनाई देती है, जब वे कहते हैं- इसे अनुभव करना बहुत कठिन है कि कैसे भारतीय जीवन के सातत्य को पूर्णतया विच्छिन्न कर दिया गया है। अंग्रेजी शिक्षा की केवल एक पीढ़ी तथा यह अपने मूल से वंचित ऐसे अल्पज्ञ बौद्धिक अस्पृश्य का सृजन करती है जो पूर्व अथवा पश्चिम, भूत अथवा भविष्य कहीं का नहीं है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक भयप्रद है उसकी आध्यात्मिक सातत्य नष्ट होने की सम्भावना। भारत की सभी समस्याओं में सर्वाधिक कठिन तथा परम अनर्थकारी है शिक्षा की समस्या।

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने भारतीय मनीषियों की इन्हीं चिन्ताओं के समाधान तथा लार्ड मैकाले द्वारा उत्पन्न की गयी चुनौती से निपटने के लिए भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप शिक्षा का तन्त्र खड़ा करने की नींव 1932 ईस्वी में रख दी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने वरेण्य गुरुदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के सपनों को साकार किया। उन्होंने अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध और समुन्नत करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को वृहत्तर स्वरूप प्रदान किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत आज तीन दर्जन से अधिक शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान, चिकित्सा संस्थान तथा सेवा संस्थान संचालित हो रहे हैं। प्राथमिक

शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के परम्परागत शिक्षण संस्थानों के साथ-साथ तकनीकी एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संस्थानों में हजारों छात्र-छात्राएँ रोजगारपरक पुस्तकीय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ भारतीयता तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ रहे हैं। प्रतिवर्ष 4 दिसम्बर से 10 दिसम्बर तक चलने वाले महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक सप्ताह-समारोह तथा 4 दिसम्बर को निकलने वाली गोरखपुर महानगर की सड़कों पर शोभा-यात्रा में सम्मिलित समस्त शिक्षण संस्थाओं के हजारों अनुशासित तथा राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत युवा पीढ़ी को देखकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के साकार स्वप्न का अनुभव किया जा सकता है। सम्भवत: यह देश का ऐसा एकमात्र शिक्षा संस्थान है जो प्रतिवर्ष लगभग साढ़े छ: सौ छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति देता है तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास में भारतीयता को सर्वाधिक महत्त्व देता है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत 1949-50 में स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु 1958 ईस्वी में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा समर्पित कर दिये जाने की स्मृतियों को संजोये महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने पुन: 2005 ईस्वी में जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय तथा 2006 ईस्वी में गोरखपुर महानगर के रामदत्तपुर में महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना की। शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी गुरुश्री गोरखनाथ चिकित्सालय, गुरुश्री गोरखनाथ योग संस्थान तथा महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय की स्थापना एवं उनका उत्तरोत्तर विकास महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की जन-सेवा के क्षेत्र की उल्लेखनीय उपलब्धि है, जिनके माध्यम से उनकी यशगाथा पुष्प के सुगन्ध की तरह प्रसरित है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व एक ऐसे मनीषी का विराट स्वरूप है जिसमें 'धर्म' का साक्षात् दर्शन होता है। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी; कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की दूषित अवधारणा को नकारते हुए धर्माधिष्ठित राजनीति की प्रतिष्ठा की। भारतीय समाज में 'जातिवाद' की विषबेलि को समूल उखाड़ फेंका और बिना किसी की परवाह के सामाजिक समरसता का मूलमंत्र देकर भारतीय धर्मगुरुओं का नेतृत्व किया तथा छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जन-जागरण अभियान छेड़कर हिन्दू समाज को एकता का पाठ पढ़ाया। शिक्षा और स्वास्थ्य को जन-सेवा का आधार बनाकर 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' उक्ति को चरितार्थ किया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के बहाने पंथों के नाम पर बँटे धर्मगुरुओं को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय स्वाभियान तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का शंखनाद किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने युग के एक ऐसे महानायक हैं जिन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक साथ पुनर्जागरण का उद्घोष किया। भारत के बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के तथा इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में वे

जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। वे ऐसे महायोगी हैं जिनका अन्त:करण समता में स्थित है, जिन्होंने इस जीवित अवस्था में ही सबको जीत लिया है, जो जीव-मुक्त हो गये हैं और ब्रह्म में ही स्थित हैं; जैसा कि भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः॥

परलोक गमन

गोरक्षनाथ मन्दिर में गुरु पूर्णिमा (आषाढ़ पूर्णिमा, वि.सं. 2071) को अपने सभी भक्तों को आशीर्वाद देकर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज मृत्युलोक से अनमनस्क से हो गये। ईश्वर की बनायी इस मायानगरी से उनकी अरुचि भाँपते हुए उनके साथ साये की तरह रहने वाले गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने 13 जुलाई, 2014 को मानव क्षमताओं के बल पर विधाता को चुनौती देने की क्षमता रखने वाले दुनिया के श्रेष्ठतम चिकित्सा संस्थानों में एक गुड़गाँव, नयी दिल्ली के पास 'मेदान्ता मेडिसिटी' में ले जाने की तैयारी प्रारम्भ की। पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने मेदान्ता जाने से अपनी अरुचि दिखाई। गुरु-शिष्य के बीच के हठयोग में प्रकृति गुरु के साथ खड़ी हुई और एअर एम्बुलेन्स से ले जाने में अपनी असफलता महसूस करते ही 'गोरखधाम एक्सप्रेस' से पूज्य महन्त जी को लेकर 'मेदान्ता' तक पहुँच ही गये। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज श्रेष्ठतम चिकित्सा सुविधाओं से लैश कर दिये गये और उन्हें इस धराधाम पर रोके रखने का हर प्रकार का प्रयत्न प्रारम्भ हो गया। पूज्य महन्त जी महाराज को अपने बीच बनाये रखने हेतु उपचार के साथ-साथ, ज्योतिषीय विधि-विधान एवं ईश्वरीय शक्तियों के लिए धार्मिक अनुष्ठान जैसे वे सभी प्रयास प्रारम्भ हुए जो विज्ञान एवं आस्था दोनों माध्यमों से सम्भव था। किन्तु स्वयं परमपूज्य महन्त जी महाराज का ही अब इस सांसारिक जीवन से मोहभंग हो चुका था और वे परमात्म तत्त्व के साथ एकाकार होने का हठ ठान चुके थे। बस उन्हें प्रस्थान के लिए अपनी तप:स्थली से दूर 'मेदान्ता' जैसा चिकित्सकीय स्थान मंजूर नहीं था। अपने आराध्य गुरु शिवावतार महायोगी गोरक्षनाथ, गुरुदेव ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं स्वयं की तप:स्थली गोरक्षनाथ मन्दिर से ही ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान करने का जैसे उन्होंने व्रत ले रखा हो। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के इस संकल्प साधना के आगे विज्ञान हतप्रभ था, विधाता किंकर्तव्यविमूढ़ थे। अन्ततः शिष्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने गुरु की इच्छापूर्ति का बीड़ा उठा ही लिया और गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर तक उन्हें लाने का वह निर्णय लिया, जो कोई योगी ही ले सकता है। योगी जी के इस निर्णय के साथ पूज्य महन्त जी की स्वयं की इच्छा से उत्पन्न उनकी प्राणिक चेतना को रोक रखने की यौगिक शक्ति थी ही, परमात्मा ने भी साक्षात् उपस्थित होकर सहयोग किया।

12 सितम्बर, 2014 को अपराह्न 4.00 बजे दिल्ली से एअर एम्बुलेंस उड़ा। गोरखपुर के आसमान में तड़कती बिजली ने स्वागत किया, बादलों ने गोरखपुर की धरती को धोकर स्वच्छ कर दिया।

15-20 मिनट की मूसलाधार बारिश के बाद बादलों ने पानी रोक लिया। एअर एम्बुलेंस गोरखपुर की धरती पर सायंकाल 6.00 बजे उतरा। साथ चल रहे मेदान्ता एवं गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय के चिकित्सक विधाता की लीला और महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की यौगिक शक्ति का साक्षात् दर्शन कर रहे थे। एअरपोर्ट पर पहले से तैयार गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय की एम्बुलेंस महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को लेकर श्री गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर की ओर चल पड़ी। योगी आदित्यनाथ जी महाराज साथ थे। उनके चेहरे पर सन्तोष झलक रहा था कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपनी इच्छानुसार गोरक्षनाथ मन्दिर पहुँचने जा रहे हैं। लगभग सायं सात बजे गोरक्षनाथ चिकित्सालय में पहले से ही पूज्य महन्त जी के लिए तैयार विशेष चिकित्सा कक्ष में उन्हें ले जाया गया। मेदान्ता से साथ आए चिकित्सक और गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय के चिकित्सकों की टीम ने अपना सर्वश्रेष्ठ उपचारात्मक प्रयास प्रारम्भ कर दियां किन्तु नाथपंथ के महान साधक के सामने सभी बेबस। पूज्य महन्त जी अपनी ऐहिक यात्रा पूरी कर चुके थे। श्री गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर तक पहुँचकर यहाँ की आध्यात्मिक आबोहवा में वे परमशान्ति पा रहे थे। लगभग दो माह तक अपने विधि-विधान को टाल देने वाले विधाता धरती के इस महामानव को अपने में समाहित कर लेने के लिए जैसे स्वयं साक्षात् हों। लगभग डेढ़ घण्टे तक चिकित्सकों की जद्दोजहद काम नहीं आयी। योगी आदित्यनाथ जी महाराज के रूप में अपना ऐहिक जीवन स्थानान्तरित करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर परमपूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज रात्रि आठ बजकर तीस मिनट पर ब्रह्मलोक पथ पर चल पड़े.....।

भारतीय राष्ट्रीयता के अनन्य साधक, सामाजिक समरसता के अग्रदूत, हिन्दू धर्म-संस्कृति के पथ-प्रदर्शक का मृत्युलोक को त्याग देने के समाचार से देश हतप्रभ था, शोकमग्न था। देखते-देखते महानगर गोरखपुर की दुकानें बन्द हो गयीं। सड़क पर सन्नाटा तोड़ते शोकाकुल नगरवासी श्री गोरक्षनाथ मन्दिर की ओर चल पड़े। जिला प्रशासन गोरक्षनाथ मन्दिर पहुँच चुका था। अश्रुपूरित नेत्र एवं रुँधे गले से पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने 13 सितम्बर को जनता दर्शन एवं 14 सितम्बर को समाधि की घोषणा की। गोरक्षनाथ मन्दिर में पशु-पक्षी सभी शान्त थे। पेड़-पौधों ने भी ऐसी चुप्पी साध रखी थी जैसे आज वे हवा के झोंकों के बीच हँसना-मचलना भूल गए हों। शोकमग्न गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर के सन्नाटे में शान्तिपाठ का स्वर अपने आराध्य इस महामानव के परलोकगमन का साक्षी बन रहा था।

13 सितम्बर को ब्रह्ममुहूर्त से ही भक्तों का मन्दिर आना प्रारम्भ हो गया। भगवान् भास्कर भी गोरक्षपीठाधीश्वर को ब्रह्मलोक यात्रा पथ को प्रकाशित करने में लगे थे। उनकी इस लीला को मेघों ने ढक रखा था। पूज्य महन्त जी महाराज का समाधियुक्त शरीर दर्शनार्थ स्थापित करने से पूर्व भक्तों एवं दर्शनार्थियों की कतारबद्ध भीड़ बढ़ती जा रही थी। उनके जयघोषों के साथ साढ़े आठ बजे गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने विधि-विधानपूर्वक परमपूज्य महन्त जी महाराज को भक्तों के दर्शनार्थ प्रस्तुत किया और घण्टों पंक्ति में खड़े रहकर शोकाकुल भक्त पूज्य महन्त जी महाराज

का दर्शन कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करने लगे। उनका दर्शन कर पुष्पांजलि देने का यह क्रम अगले दिन उनके समाधिस्थ होने तक चलता रहा।

14 सितम्बर को निशा की कालिमा का रंग जैसे-जैसे हल्का होता गया, भोर से ही वरुण देवता गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की समाधि के साक्षी बनने को बेताब हो उठे। उन्होंने अपने कोष का सारा जल ब्रह्मलीन महाराज जी को नहलाने हेतु गोरखपुर में उड़ेल रखा था। मूसलाधार बारिश में भी श्री गोरक्षनाथ मन्दिर का परिसर भक्तों-श्रद्धालुओं से खचाखच भर चुका था। देश भर से साधु-सन्त श्री गोरक्षनाथ मन्दिर पहुँच चुके थे। दस बजकर पचास मिनट पर भारत के इस महान राष्ट्र सन्त की समाधि तय थी। समाधि के समय एकाएक जल-वर्षा बन्द हुई और फिर पुष्पवर्षा के साथ गुरु श्री गोरक्षनाथ मन्दिर की परिक्रमा कर विधि-विधानपूर्वक राष्ट्रीयता के अनन्य साधक एवं इस शताब्दी के महामानव ने महासमाधि ले ली। हम सभी विधि के विधान के आगे बेबस खड़े देखते रह गए.....।

श्रद्धांजलि

श्रीमहन्त अवेद्यनाथ जी अन्यों के हित का ध्यान रखते हुए हिन्दुओं के अस्तित्व और आदर्श की रक्षा, देश की सुरक्षा तथा अखण्डता के प्रबल पक्षधर थे। हिन्दुओं के प्रशस्त मान-बिन्दुओं की रक्षा की भावना से आपका संघर्षमय जीवन अनुकरणीय है। हार्दिक श्रद्धांजलि।

-शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती
श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरी (उड़ीसा)

****

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के प्रमुख सेनानी, हिन्दुत्व एवं गोमाता के रक्षक गोरक्षपीठाधीश्वर माननीय श्री अवेद्यनाथ जी महाराज देश के देदीप्यमान रत्न थे। आपके निधन से देश की अपूरणीय क्षति हुई है। ऐसे देश-रत्न के कृत-कार्यों को स्मरण कर कण्ठावरुद्ध हो जाता है। उनके प्रति हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित है। समस्त भक्त-मण्डल को उनके वियोग सहन करने की क्षमता भगवान् प्रदान करें।

-श्री स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज
श्रीमज्ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य, चमोली, उत्तराखण्ड

****

परमश्रद्धेय श्री अवेद्यनाथ जी महाराज के इहलोक से गमन का वेदनादायक समाचार प्राप्त हुआ। समाज के लिए तथा समाज में काम करने वाले हम सबके लिए यह बहुत बड़ी हानि है। समरसता, स्वाभिमान तथा न्याय के लिए सतत प्रयत्नशील रहकर अपने संगठन-कौशल्य से सबको प्रेरणा देने वाला अभिभावक हमने खो दिया है।

-मोहन भागवत (सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

****

ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज महानतम राष्ट्र-सन्त थे। उन्होंने सनातन धर्म-परम्परा को जीवन्त और सशक्त बनाये रखते हुए राष्ट्र के उत्थान हेतु सामाजिक समरसता कायम करने का जो सन्देश दिया वह चिरस्मरणीय एवं अनुकरणीय है। समग्र राष्ट्र उनका सदैव ऋणी रहेगा। उन्हें शत्-शत् नमन एवं श्रद्धांजलि।

-नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री, भारत सरकार)

****

श्रीमहन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हिन्दू सनातन परम्परा को सुदृढ़ बनाये रखते हुए राष्ट्रोत्थान के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे। उनके परलोकगमन से धार्मिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में

अपूर्णनीय क्षति हुई है। ब्रह्मलीन महन्त जी को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

-**सुमित्रा महाजन,** लोकसभा अध्यक्ष

महन्त अवेद्यनाथ जी परम गुरुभक्त, राष्ट्रप्रेमी, अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के संस्थापक और संचालक के रूप मे ख्यातिलब्ध रहे। समय-समय पर अनेक सम्मेलनों का संयोजन, विशाल पुस्तकालयों की स्थापना, पुरातात्त्विक सामग्रियों का संकलन, धार्मिक साहित्य का लेखन, सम्पादन, अनुवाद और प्रकाशन, देववाणी का प्रचार, गुरु-परम्परा का निर्वाह, स्फुट वक्तृता और जटिल समस्याओं के समाधानार्थ समुचित मार्गों के अन्वेषण प्रभृति कार्य प्रत्युत्पन्नमति स्व. महन्त जी के जीवन के मानो अङ्गभूत थे। सन्त-समाज में आप यशस्वी महात्मा के रूप में प्रख्यात थे, हैं और रहेंगे। हम स्व. महन्तश्री अवेद्यनाथ जी की आत्मा की चिरशान्ति हेतु प्रभु से विनती करते हैं।

-**ब्रह्मचारी नारायणानन्द** (श्रीशारदापीठ, द्वारका)

****

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन के प्राण थे। हिन्दू समाज की एकता को बनाये रखने तथा समाज में से छुआछूत जैसी बुराई को मिटाने के कार्य को उन्होंने अपने जीवन का मिशन बना लिया था। अयोध्या में भगवान् राम की जन्मस्थली पर एक भव्य मन्दिर का निर्माण होता, वे नहीं देख पाये, इसकी पीड़ा उन्हें अन्तिम समय तक थी, जो उन्होंने स्वयं मुझे व्यक्त की थी।

विश्व हिन्दू परिषद् की ओर से मैं प्रभु चरणों मे प्रार्थना करता हूँ कि वे हम सबको उनके द्वारा आरम्भ किये गये कार्यों को चलाते रहने की सामर्थ्य प्रदान करें, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने श्रद्धासुमन महाराजश्री के चरणों में समर्पित करता हूँ।

-**अशोक सिंहल, संरक्षक,** विश्व हिन्दू परिषद

****

परम पूज्य महाराज जी महासंघ के संरक्षक थे। उनके संरक्षकत्व में महासंघ की स्थापना हुई और भारत इकाई ने प्रगति की है। उनके ब्रह्मलीन होने से महासंघ ने एक पितृतुल्य महामानव को गँवाया है। महासंघ के सभी सदस्य शोकाकुल हैं और उनकी आत्मा की चिर शान्ति की कामना करते हैं।

-**कर्नल हेम बहादुर कार्की,** अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दु महासंघ

****

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हिन्दू संस्कृति एवं हिन्दू परम्परा की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। हिन्दू समाज के गौरव को उन्होंने सदैव ही उत्थानोन्मुख किया। हिन्दू समाज को एकत्रित एवं संगठित करने में उनका अमूल्य योगदान रहा है। उनका सम्पूर्ण जीवन हिन्दुत्व को समर्पित था। उन्हें हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि।

-**अमित शाह** ,राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

मैं पूज्य महन्त जी से अनेक बार मिला और अभी-अभी भी मिला था। जब-जब मिले, तब-तब पूज्य महन्त जी से कोई-न-कोई नया ज्ञान प्राप्त हुआ। उनके हृदय में माँ का प्रेम था और उनके मन में हिन्दू योद्धा की आग थी। पूज्य महन्त जी के चले जाने से आज भारत ने एक 'समरस हिन्दू योद्धा' खोया है। अब पूज्य महन्त जी को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि अयोध्या में भगवान् श्रीराम जी का भव्य मन्दिर शीघ्र बने एवं भारत के हिन्दू जाति भूलकर एक होकर समरस हिन्दू के नाते समर्थ भारत बनायें जहाँ हिन्दू सुरक्षा, समृद्धि और सम्मान को कोई ठेस न पहुँचा पाये।

-**डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया**, कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

****

ब्रह्मलीन श्रद्धेय महाराज जी भारत के धर्माकाश के ध्रुवतारे की तरह चमकते हुए सितारे थे। वे नाथपंथ के भूषण थे। हिन्दू धर्म तथा संस्कृति के पोषक और संरक्षक थे। वे दया और करुणा की प्रतिमूर्ति थे। श्रीरामजन्भूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष रहते हुए भगवान् श्रीरामजी के भव्य और दिव्य स्वरूप की रूपरेखा तैयार करने में आपकी बड़ी महती भूमिका रही है। नाथ सम्प्रदाय के आप आजीवन अध्यक्ष रहे और इस आधुनिक युग में नाथ सम्प्रदाय को समयानुकूल अपने कर्तृत्व तथा नेतृत्व प्रदान करते हुए नाथपंथ को बुलंदियों तक पहुँचाया। समाज को छुआछूत की भावना से मुक्त करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। आप गरीबों, असहायों तथा पीड़ित मानव को देखते ही द्रवित हो उठते थे और उनकी सदा हर प्रकार से सहायता करते रहते थे। आप जैसे संत सदियों में पैदा होते हैं। आज हम सभी आपके कैलासवासी होने से मर्माहत हैं। महायोगी गुरु गोरक्षनाथजी तथा सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथजी से प्रार्थना है कि आपको अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा सभी शिष्यों को इस दु:ख की घड़ी में हिम्मत दें और आपके दिखाये हुए मार्ग पर चलते हुए योगी आदित्यनाथजी उस कार्य को उसी प्रकार निरन्तर करते हुए जो अलख आपने जगायी थी, उसे जगाते रहें और हिन्दू तथा हिन्दू धर्म को राह दिखाते रहें। मैं स्वयं तथा अपने मठ के सभी सन्तों की तरफ से हार्दिक संवेदना तथा श्रद्धांजलि देता हूँ।

-**महन्त चाँदनाथ योगी**, मठ अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

****

परम पूज्य महाराज जी का अचानक जाना एक युग की समाप्ति हुई। महाराज जी वनवासी समाज और नगरीय समाज के बीच समरसता कायम करने में सहायक सिद्ध हुए। महाराज जी हमेशा सुदूर जशपुर सुन्दरगढ़ जैसे वनवासी क्षेत्रों में हो रहे धर्मान्तरण पर चिन्तन, मनन करते और उसके सापेक्ष होने वाले कार्यों की जानकारी स्वयं लेते रहते थे। सामाजिक सौहार्द्र के संरक्षक हमारे पिता तुल्य महाराज जी की आत्मा को परम पिता परमेश्वर शान्ति प्रदान करें।

-**जगदेव राम उरांव**, अध्यक्ष- अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम, जशपुर(छत्तीसगढ़)

महन्त जी अद्भुत प्रतिभा के अनूठे सन्त थे। जहाँ उनके जीवन में बच्चों जैसी सरलता थी, अपनों के प्रति आत्मीयता और प्यार था, वहीं वह अपनी नीतियों, सिद्धान्तों और विरासत में मिली परम्पराओं के प्रति बड़े दृढ़ थे। सामाजिक समरसता और हिन्दुत्व उनकी आस्था के मुख्य विषय थे। आज महन्त जी नहीं हैं लेकिन विश्वास है कि उनके योग्य शिष्य योगी आदित्यनाथ उनके संकल्पों को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज के चरणों में मेरे श्रद्धा-सुमन समर्पित।

-**स्वामी चिन्मयानन्द,** पूर्व गृहराज्य मंत्री, भारत सरकार

****

परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर धर्म, संस्कृति, समाज, राष्ट्र के जीवन-मूल्यों, विचारों, संस्कारों को जो स्वयं आचरण में जीवन जीकर समाज को समरसता और मानबिन्दुओं, श्रद्धाबिन्दुओं के प्रति सदैव प्रेरणा देते रहे, उनका समय-समय पर मिला दिग्दर्शन, मार्गदर्शन हमारे जीवन को समाज को सदैव सत्पथ पर चलते रहने की प्रेरणा देता रहेगा।

-दिनेश चन्द्र

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद

****

महन्त जी का जीवन आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और रचनात्मक प्रेरणा से भरपूर है। आज महन्त जी का शरीर हमारे मध्य नहीं है लेकिन उनका प्रेरणादायी जीवन मूल्य हमारे मार्गदर्शन हेतु उपलब्ध है। प्रभु से प्रार्थना है कि हम सभी को महन्त जी द्वारा सुझाये मार्ग पर चलने की सामर्थ्य प्रदान करें। परम पूज्य के चरणों में विनम्र श्रद्धासुमन।

-नरेन्द्र सिंह तोमर

मंत्री इस्पात खान श्रम व रोजगार, भारत सरकार

****

पूज्य गुरुदेव ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने सर्वसमावेशी व्यक्तित्व से आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों से लोक मंगल का बेहतर कार्य किया। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन में अग्रणी कार्य किया है। उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

-**उमा भारती** (जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार)

****

परम पूज्य महन्त श्री अवेद्यनाथ जी महाराज राष्ट्रीय संत थे। हिन्दुत्व एवं रामजन्मभूमि के पुरोधा एवं जाति-पांति, भेदभाव, छुआछूत से ऊपर उठकर समाज को संगठित करने में लगे थे। रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष बनकर सम्पूर्ण विश्व के हिन्दुओं को प्रेरित किया था। वे

चाहते थे कि धारा 370 समाप्त हो और देश में समान नागरिक संहिता लागू हो। हिन्दू समाज ने आज अपना अभिभावक खो दिया है। मेरी उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि

-डॉ. रामविलास वेदान्ती, अयोध्या

****

वर्तमान समय के साधुओं के लिए एकमात्र आदर्श साधु पूज्य महाराजश्री। मेरी अनेकश: चरणवन्दना। श्रीचरणों में श्रद्धा-सुमन।

-विजय कौशल जी महाराज

****

अपने स्थान पर आकर हमेशा के समान प्रेरणा और सहज आत्मीयता मिली। स्वर्गीय समाधिस्थ महाराज अवेद्यनाथ जी के स्थान पर माथा टेकते हुए आभास हुआ कि वे यहीं हैं। महाराज श्री योगी आदित्यनाथ जी के स्नेहपूर्ण, आत्मविश्वासपरक वार्ता से महाराज जी की उपस्थिति का विश्वास हो गया।

मैं यहाँ से हिन्दू समाज की सुरक्षा, संस्कृति के संरक्षण का विश्वास लेकर जा रहा हूँ। भरोसा मिला। यह पीठ अपनी परम्परा के अनुरूप संचालित रहेगा, प्रभावी होता जायेगा यह समझ मिली। आश्वस्त हूँ। मैं अनजान इससे ज्यादा क्या समझूँ। भक्तिपूर्वक सिर नवाकर जा रहा हूँ। ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज को मेरे भी श्रद्धा-सुमन समर्पित।

-गोविन्दाचाय

****

श्री महाराज जी के निधन से उनकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती है। राष्ट्र को हिन्दू समाज को बहुत बड़ी क्षति हुई है।

-महन्त सुरेश दास, दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या

****

पूज्य महाराज जी भारतवर्ष के महानतम व्यक्ति एवं महानतम संत थे। निकट भविष्य में इस क्षति की पूर्ति होना असम्भव-सा दिखता है।

-प्रो. उदय प्रताप सिंह (पूर्व कुलपति, वी.ब.सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

****

भावों को व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। सचमुच 'अवेद्य' थे अवेद्यनाथ जी महाराज। वही अवेद्य जिसके विषय में सांख्य और योग दर्शन वर्णन करने में असमर्थता का अनुभव करते हैं।

-प्रो. शिवाजी सिंह, शिवाला नगर, मोहद्दीपुर, गोरखपुर

****